लोग हमसे कहते है आगे बढ़ो दुनिया कहाँ जा रही है ?
हम कहते हैं चलो 1400 साल पहले चलते हैं। अहद-ए-नबवी की ठंडक लेने की कोशिश करते है तरक्की वहीं से मिलेगी।
Let us go before 1400 years.

Thursday, October 08, 2020 بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ **Publication S.N : 00000156**

प्यारे बेटे !

तू अपने नफ्स का निगरान हो जा

राहत-ए-दिल ओ जान ! प्यारे बेटे ! अपने नफ्स पर कड़ी निग़ाह रखो और अपने कान का खास खयाल रखो कि कहीं वह झूठ, चुगली, बोहतान और लग़्व चीज़ें सुनने में ना लग जाएं।
इरशाद-ए-बारी तआला है :

اِنَّ السَّمۡعَ وَ الۡبَصَرَ وَ الۡفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنۡهُ مَسۡـُٔوۡلًا (۳۶)

بے شک کان اور آنکھ اور دل ان سب سے سوال ہونا ہے

तर्जुमा-ए-कंज़ुल ईमान :

" बेशक कान और आँख और दिल सब से सवाल होना है। "

सरकार-ए-दो आलम नूर-ए-मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया :

" गीबत का सुनने वाला ग़ीबत करने वाले के गुनाह में बराबर का शरीक है। "

तुम खुद तो मख़्लूक़ के साथ इंसाफ से काम लो, मगर उन से इंसाफ का मुतालिबा ना करो। ताजदारे कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का फरमान-ए-हिदायत निशान है :

" सब से ज़्यादा फज़ीलत वाला अमल अल्लाह का ज़िक्र और मख़्लूक को अपनी तरफ से इंसाफ देना है। "

नफ्स को तौबा का आदि बनाओ और अमल-ए-तौबा हर वक़्त जारी रखो। देखो नबी-ए-मासूम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्या फरमा रहे हैं :

" मै खुद दिन में सौ मर्तबा बारग़ाहे ईलाही में तौबा करता हूँ। "